International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

JAIN DARSHAN ME KARM FAL VICHAR

Dr. Sundhansu kumar, UGC-NET
DARSHAN SHASTRA, VIBAG, P.U. PATNA

नारीवाद ने जेंडर पहचान के निर्माण के विषय में अनेकानेक विचार प्रदान किए हैं और महिलाओं की षक्तिहीनता, उत्पीड़न तथा अधीनीकरण व्यवस्थित सैद्धांतिक व्याख्या दी है। हाल के वर्षें में नारीवाद ने कई नई अवधारणाओं को उठाया है जिसके चलते उसके मूल उद्देय के विषय में आसानी से गलतहमियां पैदा हो सकती हैं। इन वर्षों में नारीवाद कई विचारधाराओं में बंटता गया है और अकसर बिलकुल अलग–अलग परिकल्पनाओं और पहलूओं को प्रतीबंधित करता है।

उदारवादी नारीवाद, मार्क्सवादी–समाजवादी नारीवाद और उग्र नारीवाद तीन उल्लेखनीय विचारधाराएँ हैं जिनकी ज्यादा चर्चा की जाती है। इनके अतिरिक्त, अष्वेत नारीवादी भी हैं जो इन विचारधाराओं से व्यापक स्वायत्तता का दावा करती हैं।, जिसका वास्तविक आषययही है कि ये विचारधाराएं नस्ल आधारित षोषण का नजरअंदाज करती हैं, अराजकतावादी नारीवादियों ने भी अपनी विषिष्ट भिन्नता बनाए रखती हैं, और वे आराजकतावाद के अधिनायकवाद विरोधी तर्क में आस्था रखती हैं। इसी प्रकार पर्यावरणीय नारीवादी, महिलाओं को प्रकृति, पर्यावरण और पृथ्वी के प्रति चिंताओं के साथ जोड़ते हैं।

नारीवाद महिला उत्पीड़न के विभिन्न पहलूओं को समझने की दिषा में प्रयासरत एक गतिषील और निरंतर परिवर्तित होनी वाली विचारधारा है जिनमें व्यक्तिगत, राजनीतिक और दार्षनिक पहलू भी षामिल हैं, लेकिन वो एक विचार इन सभी नारीवादी दृष्टिकोणों में समान है, वह यह है कि सभी मौजूद स्त्री–पुरूष संबंधों कोबदलने की दिषा में केंद्रित हैं। दूसरे ष्ब्दों में, ये भी विचारधाराएं इस तथ्य से पैदा होती है कि न्याय के लिए महिलाओं को **स्वतंत्रता व समानता** दी जानी आवष्यक है। लेकिन कई दार्षनिक प्रष्नों पर इनके बीच गहरे मतभेद भी हैं, मसलन,स्वतंत्रता तथा समानता का स्वरूप कैसे हो, राज्य के कार्य कौन से हैं, मानव स्वाभव (विषेषकर, महिलाओं

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

के विषय में) का निर्माण कैसे होता है, जिसे या तो सामाजिक ऐतिहासिक परिस्थितियों की उपज माना जाता है या जीव वैज्ञानिक रूप से निर्धारित माना जाता है। इसलिए नारीवाद की राजनीतिक रूप से प्रभवी षाखएं बदलाव लिए अलग–अलग रणनीतियों में विष्वास रखती हैं क्योंकि महिला उत्पीड़न के कारणों के विषय में उनका दृष्टिकोण अलग–अलग है।

एक महत्वपूर्ण मुद्दे को सभी नारीवाद विचारधाराओं ने संबोधित किया है, 'सार्वजनिक–निजी' का भेद, जिसे पष्चिमी दर्षन में मुख्यधार का स्थान प्राप्त है। परंपरागत राजनीतिक सिद्धांतो ने मानव अस्त्वि के निजी और सार्वजनिक दायरों के बीच हमेषा फर्क किया है। यौनिकता, बच्चा पैदा करना और बच्चों का पालन–पोषण 'निजी' दायरों में आते हैं क्योंकि इन कामों को प्राकृतिक मान जाता है। इसलिए इस दृष्टिकोण के अनुसार, परिवार जैसी संस्थाओं को राज्य हस्तक्षेप के कार्यक्षेत्र से बाहर माना जाता है। नारीवादी इस समझ पर सवाल खड़ा करते हुए तर्क देती हैं कि मूलतः परिवार हीवह स्थान है जहां स्त्री उत्पीड़न सबसे अधिक होता है। सार्वजनिक निजी विभाजन को स्वीकार करने के कारणसमाज से उत्पीड़न को वैधता मिल जाती है। इसलिए यह आवष्यक है कि 'निजी' क्षेत्र को भी न्याय, समान्ता औा स्वतंत्रता के उन्हीं मूल्यों की कसौटी पर कसा जाना चाहिए जिन्हें सार्वजनिक दायरे में लागू किया जाता है।

विभिन्न नारीवाद परंपराओं में इस विभाजन को अलग–अलग रूप में जगह दी गई है लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि यह विभाजन उन सभी में समान रूप से महत्वपूर्ण है। उदारवादी नारीवाद ने जेंडर विभेदीकरण को समाजीकरण की उपज के रूप में देखा है, और इसलिए उन्होंने महिला समानता के लिए सफल अभियान चलाया है, हलांकि उनकी मांगे कानूनी सुधारों और समान अवसरों के उपलब्धता के प्रष्न तक सीमित दिखाई देती हैं। वह मौजूद जेंडर असमानता, जिसके कारण महिलाओं के सामने उपलब्ध विकल्प सीमित हो जाते है, की गहनतर संरचनाओं को समझने में विफल रही हैं। यह परंपरा विभिन्न नरमपंथी समूहों में आज भी कायम है। अमेरिका में नेषनल आर्गेनाईजेषन फॉर विमेन उसी परंपरा का वाहक है, और उसकी राजनीति महिलाओं की

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

स्थिति सुधारने के लिए कानूनी सधारों की लड़ाई तक सीमित है।

उदारवादी नारीवादी दूसरी दोनों नारीवादी विचारधाराओं यानी मार्क्सवादी समाजवादी और रेडिकल नारीवादी दोनों को ही आलोचना का षिकार रही हैं। मार्क्सवादी समाजवादी और रेडिकल नारीवादियों की नजर में उदार नारीवादियों की समस्या यह है कि वह मौजूदा परिवार व्यवस्था का पर्याप्त प्रतिरोध नहीं करती हैं और न केवल औपचारिक समानता से संतष्ट हैं। इस तरह, उदारवादी नारीवाद पूंजीवाद और पितृसत्ता की भौतिक और गहरे पैठी असमान्ताओं की अनदेखी करता है। दूसरे षब्दों में, उदारवादी नारीवादी समाज में जेंडर उत्पीड़न की गहड़ी जड़ों को प्र्याप्त रूप से समझने में विफल रही हैं। दूसरी तरफ मानवतावाद के मार्क्सवादी और रेडिकल नारीवादी संस्करणों में स्त्री के वास्तविक स्वाभव के दमन या अस्वीकार्यता के लिए पूंजीवादी और पितृसत्तात्मक समाज की संरचनाओं को जिम्मेदार माना जाता है।

पितृसत्ता को समझने के अपने प्रयासों में रेडिकल नारीवादियों ने ' व्यक्तिगत और राजनीतिक' आलोचना का काफी प्रयोग किया गया है। वह सत्ता के पूरे प्रष्न को व्यक्तिगत क्षेत्र में स्थापित करती हैं और निजी/सार्वजनिक विभाजन को पूरी तरह खारिज करती हैं। ' व्यक्तिगत ही राजनितीक है' का नारा रेडिकल नारीवादियों का एक बहुचर्चित नारा है।

मार्क्सवादी नारीवादी भी मानती हैं कि महिलाओं का उत्पीड़न मूलतः परिवार में उनकी परंपरागत स्थिति के कारण होता हैं लेकिन, रेडिकल नारीवादियों से भिन्न, उनका जोर श्रम पर रहता है। यानी कि महिलाओं को सार्वजनिक उत्पादन से बाहर कर दिया जाता है जिसके कारण वह घर की निजी दुनिया में घरेलू कामों बंध कर रह जाती हैं। उदारवाद की मार्क्सवादी आलोचना समान अवसरों के सतही वायदे पर आधारित महिलाओं की असमानता की जड़ों को पहचानने का अवसर उपलब्ध कराती प्रतीत होती है।

यहां तक कि सार्वजनिक जीवन में भी महिलाएं एक निम्न वर्ग का निर्माण करती हैं– उनके वेतन कम

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

होते हैं, हैसित कमजोर होती है और प्रभाव का अभाव होता है। लेकिन पूंजीवाद की आलोचना के तौर पर, मार्क्सवाद भी प्रजनन और लिंग के आधार पर श्रम विभाजन को उतनी गंभिता से नहीं लेता है और महिलाओं को मुख्यतः श्रम प्रक्रिया के संदर्भ में ही देख्ता है। इस प्रकार मार्क्सवादी भी पितृसत्ता को पूंजीवादी व्यवस्था के लिए लाभकारी से अधिक नहीं मानते हैं। मार्क्सवादी नारीवादी इससे परे भी जाती है, और वह हालांकि वह यह दावा नहीं करती है कि महिला उत्पीड़न पूंजीवाद की उपज है, लेकिन वह यह जरूर मानती हैं कि पूंजीवाद महिलाओं के उत्पीड़न को सघनता देता है, और पूंजीवाद को बनें रहने के लिए इस उत्पीड़न में इजाफा जरूरी है। दूसरे षब्दों में, मार्क्सवादी नारीवादियों के अनुसार, पूंजीवाद और पुरूष वर्चस्व एक–दुसरे को पुष्ट करते हैं। 'पूंजीवादी पितृसत्ता' षब्द ज़िल्लाह आईज़नटीन ने दिय था। मार्क्सवादी/समाजवादी नारीवादी मानती हैं कि मार्क्सवदी आलोचना अपने सैद्धांतिक में सीमित है क्योंकि पूरा विर्मष पुरूष द्वारा स्त्री के यौन उत्पीड़न की तुलना में पूंजी को ही ज्यादा उत्पीड़क और दोषी मानता है जो कि उचित नहीं है।

सत्तर के दषक में समाजवादी नारीवादियों ने पारिवारिक श्रम पर बहस की षुरूआत की और परंपरागत मार्क्सवाद की यह कहते हुए आलेचना की कि उनहोंने पूंजीवादी को बनाए रखने में महिलाओं के पारिवारिक श्रम की भूमिका की अनदेखी की है। सार्वजनिक उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करने के जरिए, घर के भीतर किए जाने वाले श्रम के महत्व और आर्थिक मूल्य का नकार दिया गया था। सामाजवादी नारीवादियों ने कहा कि स्त्री के घरेलू श्रम ने पुरूष और पूंजीवाद दोनों को लाभ पहुँचाया है। घर के भीतर, स्त्री का अवैतनिक श्रम दो चीजें मुहैया कराता है : (क) देखभाल और भोजन आदि बनाने के कारण पुरूष श्रमिकों को दैनिक श्रम, और (ख) बच्चा जनने और उसके लालन–पालनके जरिए भविष्य की श्रमषक्ति। यहां वह संदर्भ था जिसमें मारिया रोजाइ, डाला कास्टा और सेलमा जेम्स जैसी नारीवादियों ने घरेलू श्रम के लिए वेतन का प्रष्न उठाया था।

इस बहस ने स्पष्ट कर दिया कि परंपरागत मार्क्सवाद को इसलिए अपर्याप्त कहा जा सकता है क्योंकि इसने सामाजिक तथा सांस्कृतिक या यौन उत्पीड़न को महज आर्थिक षोषण का प्रतिबिंब माना था। इससे भी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

बढ़कर स्वंय अर्थव्यवस्था के विषय में उसका सैद्धांतिकरण भी काफी संर्कीण था। इसलिए मार्क्सवादको परिवार में महिला के श्रम के विषय में विषलेषण करना चाहिए। उसे इस प्रष्न का उत्तर खोजना चाहिए कि पारिवारिक श्रम से किसको लाभ होता है। लिंग के आधार पर श्रम विभाजन में स्त्री पूंजीवाद और पुरूष दोनों की सेवा करती है।

उदारवादी और मार्क्सवादी सोच के बरकस रेडिकल नारीवाद सैद्धांतिक दृष्टि से काफी अभिनव रहा है। उसने राजनीति और सिद्धांत दोनों की परंपरागत परिभाषओं की खारिज किया है जबकि सभी पीछले राजनीति सिंद्धांत की पितृसात्तात्मक कहते हुए निंदा की है। मार्क्सवादी सोच से भिन्न इसने स्त्री को पहले से मौजूद राजनीतिक फ्रेमवर्क में स्थित करने के प्रयास न करके, समाज के विषय में हमारे पूरे दृष्टिकोण को बदलने का प्रयास किया है जिससे उसे स्त्री केंद्रित अर्थों के बिल्कुल नए सांचे में पुनर्संयोजित किया जा सके। इसका उद्देष व्यक्तिगत पहचानों को पुनर्परिभाषित करना, भाषा और सांस्कृतिक को उनके वर्त्तमान मर्दाना स्वरूप से बाहर निकलना, राजनीतिक सत्ता को विस्थापित करना, मानव स्वाभाव का पुनर्मूल्यांकन करना और परंपरागत मूल्यो की चुनौती देना रहा है। रेडिकल नारीवादियों ने स्त्रीत्व (जिसे पितृसत्ता निम्नता मानती है) को पुरूषों से अलगाव में सामाजिक संगठन के एक वैकल्पिक आधार के रूप में एक नया मूल्य प्रदान किया है।

रेडिकल नारीवादी उदारपंथी नारीवादियों की दलील को खारिज करती हैं कि महिलाओं के उत्पीड़न का आधार उनके राजनीतिक नागरिक अधिकारों के अभाव में निहित है। इसी प्रकार वह इस कलासिकल मार्क्सवादी विष्वास को भी अस्वीकार करती है कि महलाएं इसलिए उत्पीड़ित हैं क्योंकि वह एक वर्ग सामाज मे रहती हैं। रेडिकल नारीवादी मानती हैं कि महिलाओं के उत्पीड़न की जड़ में जैवकीय (Biological) कारण और उससे संबंधित वर्ग उत्पीड़न के उदय से पहले, उत्पीड़न का मूल रूप रहा है। हालांकि रेडिकल नारीवादी मानती हैं कि जेंडर विभेदीकरण की जड़े जैविक रूप से निर्धारित हैं मगर वह तर्क भी देती हैं कि दोनों की स्थितियों में फर्क सामाजिक संरचनाकी देन है और यह फर्क पितृसत्ता के तहत् असमान्य रूप से बढ़ जाता है। केवल पितृसत्ता को नपष्ट करके ही उत्पीड़न के अन्य रूपों को समाप्त किया जा सकता है। इस प्रकार रेडिकल नारीवाद ने वोट और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

कानूनी सधारों के लिए उदार नारीवादी संर्घष के साथ–साथ पूंजीवाद के विरूद्ध मार्क्सवादी संर्घष को भी एक पूर्ण यौन क्रांति (जो परंपरागत यौन पहचानों को नष्ट कर देगी) की मांग से विस्थापित कर दिया है।

उदारपंथी और समाजवादी/मार्क्सवादी दोनों नारीवादी विचारधारों ने रेडिकल नारीवादी की समलैंगिकतावाद (Lesbianisan) और अलगाववाद (पुरूषों से अलगाववाद) (separatism) जैसे उसके अत्यंत उग्र प्रस्तावों के लिए आलोचना की हैं इसके अलावा,समाजवादी/मार्क्सवादी नारीवादी यह भी दलील देती हैं कि रेकडिकल नारीवाद पितृसत्ता के ऐतिहासिक आर्थिक और भौतिक आधार की अनदेखी करता है और फलस्वरूप एक गैर–ऐतिहासिक, जैविक निर्धारणवाद के तर्क में फंसकर रह जाता है।

इस प्रकार, आज नारीवाद एक तेजी से विकसित होती प्रमख आलोचनात्मक विचारधारा या विचाश्रृखंला के रूप में देखा जान चाहिए। इस अवधाराना में विचारों का एक विस्तृत फलक समाहित है और इसके सामने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक संभावनाएं हैं। नारी के लेखन ने दूसरे विषय को कड़ी चुनौती दी है और सामाजिक जीवन की व्याख्या और उस प्रष्न पर खड़ा करने के नये रास्ते खोले हैं। नारीवाद एक ऐसी अवधारणा के रूप में उभर रहा है जो अपने भीतर, किसी भी दिए गए समाज में परूष विषेषाधिकार और स्त्री अधीनिकरण के आलोचनात्मक और आंदोलन दोनों को समाहित कर सकती है। आज की नारीवादी सोच पुरूषवादी सत्ता को समाप्त करने का लक्ष्य रखती है।

मौटे तौर पर समकालीन नारीवादी आंदोलन ने महिला समानता के लिए उसी प्रकार योगदान दिया है जिस प्रकार 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध के नारीवाद आंदोलन कर दिया था। लेकिन, स्त्री–परूष के बीच जीव वैज्ञानिक असमानता के स्वरूप से संबधित मूल तर्क के संदर्भ में दोनों में उल्लेखनीय फर्क है। आज की नारिवादीयों की तलना में 19वीं सदी की नारीवाद 'पुरूष' और 'स्त्री–स्वाभाव के बीच काफी भिन्नताएं देखती इतिहासकारों की नारीवादी आलोचना में उत्तर पनर्जागरण काल में विज्ञान विर्मष के क्षेत्र में महिलाओं की अनुपस्थिति पर भी प्रष्न

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

खड़े किए गए हैं। इन इतिहासकारों के लेखन में मुख्य स्थान पुरूषों को ही दिया गया है या बाद के समय में एक जेंडर आधारित समाज में पुरूषों के साथ महिलाओं के लिए भी बोलने का दावा किया जाने लगा है।

नारीवाद अभी भी पुरूष प्रभुता के लिए एक विषम राजनीतिक चनौती बना हुआ है, लेकिन आज का सिंद्धांत अपने अंतिम उद्देष्य का उललेख करने के लिए ' संक्रमणात्मक' के बजाय 'क्रांतिकारी' षब्दों को ज्यादा प्राथमिकता देते हैं। नारीवादी एक ऐसे समतामूलक समाज की कल्पना करते हैं जिसमें स्त्री और परूष समान और भिन्न हो सकेंगे।

References

Jaggar, Alison, M., Feminist Polotics and Human Nature, Harveste Press, Mitchell, Juliet, Women's Estate, New York, Pantheon, 1971

Engels, Frederich, The Origin of the Family, Private Property and state, Moscow, Progress Publichers, 1948

Eisenetein, Zillah, Capitalist Partriachy and The Case for Socialist Feminism, Monthly Review Press, 1979

Omvedit, Gail, Patriarchy and Matriarchy, in Contribution to Womens Sundies – Series-7, Feminist Concepts, Part-I (General Editor : Maithryee Krishnaraj).

Poonacha, Veena, Gender Within Human Rights Discourse, Research Center for Women Studies, SNDT. Womens University, Bombay, 1995

Deasi, April, The Politics of Women's Rigths, Logman, 1988.

Vicent, Andrew. Modern Politics Ideologies. Oxford Blackwell, 1992